All India Confederation for Women Empowerment through Education (AICWETE)

Activities- 2017

18th May Conference by जस्टिस सिद्दीक़ी द्वारा संवाददाता सम्मेलन को संबोधन : मुसलमानों को वर्तमान स्थिति का बहादुरी के साथ मुक़ाबला करने की सलाह

कंफेड्रेशन फॉर सोशल जस्टिस मुसलमानों और दलितों की एकजुटता, उनके हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध

नई दिल्लीः मुसलमानों, दलितों, जनजातियों और कमज़ोर व पीड़ित वर्गों के बीच व्यापक गठबंधन और उनके हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध और सक्रिय संगठन ऑल इंडिया कंफेड्रेशन फॉर सोशल जस्टिस ने आज इस बात पर ज़ोर दिया कि देश के मौजूदा राजनीतिक हालात से निराश और परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, यह परीक्षा की घड़ी है इसका मुक़ाबला पूरे उत्साह और धैर्य से करने की ज़रूरत है।

कंफेड्रेशन के अध्यक्ष जस्टिस एम॰एस॰ए॰ सिद्दीक़ी ने यहां कंस्टीट्यूशन क्लब में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए देश में राजनीतिक सत्ता परिवर्तन, विशेषकर देश के सब से बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में आदित्य नाथ योगी के सत्ता में आगमन को इस अर्थ में ''शुभ संकेत'' क़रार दिया कि इसके फलस्वरूप मुसलमानों में एकता की लहर दौड़ गई है, जो अब तक अपने तुच्छ हितों के लिए टोलियों और समुदायों में बंटे हुए थे। बहरहाल यह सराहनीय है कि वे अब एकता की शक्ति का एहसास कर रहे हैं और धीरे-धीरे एक बिंदु पर एकत्रित हो रहे हैं।

जस्टिस सिद्दीक़ी, जो नेशनल कमीशन फॉर माइनॉरिटी इंस्टीट्यूशंज के पूर्व चेयरमैन भी हैं, ने कहा कि इस नई राजनीतिक स्थिति में मुसलमानों के पास दो विकल्प हैं, एक यह कि वे राजनीति किनारा कर लें या दलित और कमज़ोर वर्गों से हाथ मिला लें। दूसरे विकल्प की स्थिति में वे एक बड़ी राजनीतिक शक्ति बनकर उभर सकते हैं और सामर्थ्यवान बन सकते हैं। साम्प्रदायिक शक्तियों के उदय की पृष्ठभूमि में उन्होंने बुराई में भलाई का पहलू खोजते हुए यह नारा दिया कि ''जितना हम मज़बूत होंगे इतना वे मजबूर होंगे'' यानी उसके परिणाम में साम्प्रदायिक शक्तियां का ज़ोर कमज़ोर पड़ जाएगा, क्योंकि वे संख्या के आधार प्रस्तावित गठबंधन के मुक़ाबले में कहीं ठहर नहीं पाएंगी। उन्होंने कहा कि मुसलमानों का अब नारा और उद्देश्य यह होना चाहिए कि उन्हें सत्ता और देश के संसाधनों में हिस्सेदारी चाहिए किसी की ताबेदारी नहीं।

जस्टिस सिद्दीक़ी ने कहा कि यह तभी संभव है कि जब हमारा दलितों और कमज़ोर वर्गों से गठबंधन स्थापित होगा। देश की कुल आबादी में दलित 23 प्रतिशत हैं और मुसलमान भी 23 प्रतिशत हैं। यदि यह दोनों मिल जाएं तो 46 प्रतिशत आबादी एक मज़बूत राजनीतिक ताक़त बन सकती है।

उन्होंने चेतावनी दी कि अभी भी मुसलमान एकजुट नहीं हुए तो वह राजनीति की बिसात पर मात खा सकते हैं जो अनिवार्य रूप से परिणाम यह होगा कि वे अपनी मिल्ली पहचान से वंचित हो सकते हैं। इसलिए हमें अपने अस्तित्व के लिए गठबंधन की सख़्त ज़रूरत है और समय आ गया है कि मुसलमानों को दिल से नहीं दिमाग़ से काम लेना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि दिल से सोचने की आदत व्यक्ति को कमज़ोर बना देती है जबकि दिमाग़ से सोचने वाला आदमी मज़बूत होता है।

उन्होंने कहा कि मुसलमानों का मिल्ली और दीनी फ़रीज़ा है कि वे पीड़ित वर्गों के समर्थन में उठ खड़े हों, क्योंकि क़ुरआन भी इसका आदेश देता है। आज भी देश में छूआ-छूत बाक़ी है और दलितों के साथ अन्याय , उत्पीड़न और भेदभाव हो रहे हैं लेकिन इसके ख़िलाफ़ कोई आवाज़ उठाने वाला नहीं है। उन्होंने दलितों पर अत्याचार की हाल की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि जब बिहार में एक दलित लड़के ने एक सवर्ण के खेत में शौच कर दिया तो उसकी हत्या कर दी गई। इसी तरह इलाहाबाद, सहारनपुर, मुरादाबाद, संभल और मुंबई में दलितों की बस्तियों को उजाड़ा गया, उनके घरों को जला दिया गया, उन्हें मारा पीटा गया लेकिन इसके ख़िलाफ़ एक ख़ामोशी छाई हुई है।

उन्होंने इसके प्रति भी चेतावनी दी कि सत्ताधारी वर्ग अब दलित और आदिवासी आरक्षण समाप्त करने, और मनु स्मृति को लागू करने की साजिश कर रहा है जो दलितों और मुसलमानों के हिता में नहीं है। इन सभी समस्याओं और कठिनाइयों के मुक़ाबले के लिए कंफेड्रेशन का गठन किया गया है। इसके गठन में सैयद मुहम्मद कुत्बुर्रहमान, डॉक्टर शकील अहमद क़िदवई और प्रोफेसर नफ़ीस अहमद की संयुक्त सोच और विचार-विमर्श शामिल है। इस बारे में जानकारी देते हुए जस्टिस सिद्दीक़ी ने कहा कि इसमें एक सलाहकार बोर्ड होगा, इसी तरह लीगल एड का विभाग और विभिन्न समितियां भी गठित की गई हैं। यह सब दलितों और आदिवासी समुदायों के हितों की रक्षा के लिए काम करेंगी।

एक सवाल के जवाब में जस्टिस सिद्दीक़ी ने कहा कि कंफेड्रेशन इस मामले में सभी समान सोच वाले दलों और संगठनों से सहयोग करेगा और वह ऊपरी स्तर के बजाय ज़मीनी स्तर पर काम करने को प्राथमिकता देगा। दलित और मुसलमानों के उन क्षेत्रों में जहां स्कूल नहीं हैं वहां इसके निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए दलित छात्रों को शिक्षा के क्षेत्रा में अच्छा प्रदर्शन करने पर छात्रावृत्ति दी जाएगी ताकि वे उच्च शिक्षा से लाभांवित हो सकें।

संगठनात्मक संरचना के बारे में उन्होंने बताया कि देश में विशेषकर उत्तर प्रदेश के सभी ज़िलों में कंफेड्रेशन जल्दी ही एक संयोजक नियुक्त करेगा जो दलितों और मुसलमानों में जागरूकता लाने के अलावा उनकी समस्याओं की ओर भी ध्यान देगा। उन्होंने यह भी घोषणा की कि दलितों, मुसलमानों और कमज़ोर वर्गों पर होने वाली घटनाओं पर नज़र रखने के लिए एक विशेष सेल भी स्थापित किया जाएगा, जो अपनी तरह का अद्‌वितीय विभाग होगा। और पीड़ितों की हर स्तर पर सहायता करेगा।